



वर्ष-6 अंक : 98

सहयोग शुल्क : रु. 1 / मार्च : 2025

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐरुहषि प्रितेशभाई



आप की सकारात्मक सोच पराजय को विजय में बदल सकती है ।

- संतश्री ॐरुहषि प्रितेशभाई

शारीरिक विकलांगता से अधिक चुनौतीपूर्ण होती है मन की विकलांगता ।

- माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी



निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेबल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगों को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रू. ५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगों के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रू. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरूरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

मार्च : 2025, पृष्ठ संख्या : 16

वर्ष-6 अंक : 98



संपादकीय

आज जीवन इतना जटील और समस्याओं से ग्रस्त होता जा रहा है कि किसी साधारण सोच वाले या नकारात्मक सोच वाले व्यक्ति के लिए जीवन यापन करना ही नहीं किंतु जीवन जीना भी मुश्किल हो सकता है। कई बार मनुष्य संसाधनों के अभाव में नहीं बल्कि सकारात्मक सोच के अभाव में सफलता से दूर रह जाता है। अगर मनुष्य के पास चाहे कितने ही उमदा संसाधन और सुविधाएं क्यों ना हो किंतु उसके पास एक सकारात्मक सोच नहीं होगी या आगे बढ़ने का हौसला नहीं होगा तो वह सफलता की ओर पहला कदम भी नहीं उठा पायेगा। मनुष्य ने संसार में जितनी भी खोजें की हैं वह अधिकांशतः संसाधनों के अभाव में या उनकी पूर्ति के लिए ही की हैं।

विश्व की कई प्रतिष्ठित हस्तियों के विचारों को यहाँ प्रस्तुत कर के अन्य सभी लोगों को प्रेरणा देने की हमने कोशिश की है। संसार के प्रतिष्ठित दिव्यांग लोगों ने अपने जीवन को केवल अपने लिए ही नहीं बल्कि संसार के सभी लोगों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बना दिया है। उनके जीवन से प्रेरणा लेकर कई लोग अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ये ऐसे लोग हैं जिनके जीवन का संघर्ष आसान नहीं था। लेकिन अपनी मर्यादाओं के बंधनों को तोड़कर उन्होंने इस असीमित सफलताओं के समंदर में तैरना सीखा है। ऐसे लोगों को हमारी शुभ कामनाएँ।

आज हमें प्रो. अनिल कुमार अनेजा जैसे व्यक्तियों की अत्याधिक आवश्यकता है जो 100 प्रतिशत द्रष्टि हीन होने के बाद भी भारत के प्रतिष्ठित दिल्ली विश्व विद्यालय में प्रोफेसर और विभागीय अध्यक्ष के पद तक पहुंचकर लोगों को प्रेरणा दे रहे हैं। केवल शिक्षा ही नहीं किंतु साहित्य के क्षेत्र में भी अनिल कुमार अनेजा ने अपने श्रेष्ठ योगदान दिया है। दिव्यांगों के अधिकारों की लड़ाई उनकी संवेदनशीलता का परिचय देती है। दिव्यांगों के अधिकारों के लिए अनिल कुमार अनेजा की लड़ाई को हमारा पूर्ण समर्थन है और उनके दीर्घ आयुष्य और निरामय स्वास्थ्य के लिए शुभ कामनाएँ।

✦ प्रेरणास्रोत और संपादक ✦

मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८
प. पू. संतश्री सद्गुरु ॐऋषि स्वामी।

✦ सह-संपादक ✦

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

✦ संपर्क-सूत्र ✦

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

✦ मुद्रक ✦

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200



प्रेरणा के लिए सर्वश्रेष्ठ दिव्यांगता प्रेरणा उद्धरण

चुनौतियों को जीत में बदलने से लेकर जीवन के उज्ज्वल पक्ष को देखने और आंतरिक शक्ति पाने तक, दिव्यांगता प्रेरणा उद्धरणों से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। चाहे आप दिव्यांग हों या नहीं, हम सभी इन महान लोगों से मूल्यवान जीवन के सबक सीख सकते हैं जिन्होंने सभी प्रकार की चुनौतियों का सामना किया है और उन पर विजय प्राप्त की है।

आशावाद के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों पर दूरगामी लाभ हैं, और इन लोगों ने अपने जीवन में सकारात्मक सोच के प्रभावों को शक्तिशाली रूप से अनुभव किया है।

• "अन्य विकलांग लोगों को मेरी सलाह होगी कि उन चीज़ों पर ध्यान केंद्रित करें जो आपकी विकलांगता आपको अच्छा करने से नहीं रोकती हैं, और उन चीज़ों पर पछतावा न करें जिनके साथ यह बाधा डालती है। शारीरिक रूप से ही नहीं बल्कि मानसिक रूप से भी विकलांग न बनें।"

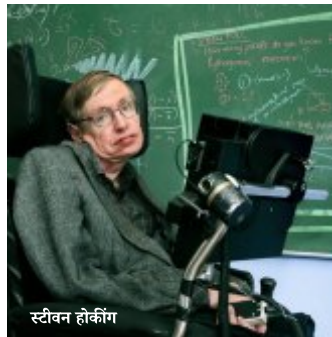
- स्टीवन हॉकिंग

स्टीवन हॉकिंग एक प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी थे, जिन्हें 20 की उम्र में मोटर न्यूरोन बीमारी हो गई थी। उन्होंने अपना अधिकांश जीवन पावर व्हीलचेयर पर बिताया और संवाद करने के लिए वॉयस जनरेटर का इस्तेमाल किया।

कई लोगों के लिए हॉकिंग्स विकलांगता का चेहरा थे, जो न केवल अपने काम के लिए बल्कि अपनी विकलांगता के बावजूद दिखाई गई महान मानवीय भावना के लिए विश्व प्रसिद्ध हुए।

• "जीवन में एकमात्र विकलांगता एक बुरा रवैया है।"

- स्कॉट हैमिल्टन

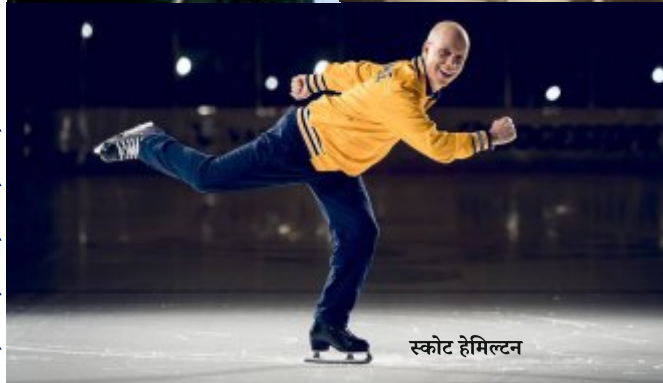


स्टीवन हॉकिंग



हेलेन केलर

स्कॉट हैमिल्टन एक अमेरिकी आइस स्केटर है, जो बचपन में हुई एक अज्ञात बीमारी के कारण सामान्य दर से विकसित नहीं हो सका।



स्कॉट हेमिल्टन

कई चिकित्सीय गलत निदानों के कारण स्कॉट का बचपन कठिनाइयों से भरा रहा, जिसे फिगर स्केटिंग प्रतियोगिताओं में भाग लेने से सुधारा गया।

18 वर्ष की आयु में, स्कॉट ने डेनवर के दक्षिण में कोलोराडो स्प्रिंग्स में ब्रॉडमूर/कोलोराडो आइस एरिना में अधिक गंभीरता से प्रशिक्षण लेना शुरू किया, और लगातार चार विश्व खिताब और एक ओलंपिक स्वर्ण पदक जीता।

• "किसी भी निराशावादी ने कभी भी तारों का रहस्य नहीं खोजा, या किसी अज्ञात भूमि पर यात्रा नहीं की, या मानव आत्मा के लिए कोई नया द्वार नहीं खोला।"

- हेलेन केलर



1881 में जन्मी हेलेन केलर 19 महीने की उम्र में ज्वर की बीमारी के कारण बहरी और अंधी हो गयी थीं।

एक प्रसिद्ध लेखिका और राजनीतिक वक्ता, हेलेन विकलांगता अधिकारों के लिए अग्रणी थीं और उन्होंने विकलांगता के बारे में समाज में व्याप्त मिथकों को दूर करने का बीड़ा उठाया।

- "एक नायक एक साधारण व्यक्ति होता है जो भारी बाधाओं के बावजूद दृढ़ रहने और सहन करने की शक्ति पाता है।"

- क्रिस्टोफर रीव

क्रिस्टोफर रीव एक अभिनेता थे जो 1970 और 80 के दशक में सुपरमैन की भूमिका निभाने के लिए प्रसिद्ध थे।

1995 में घोड़े से गिरने के कारण उनके कमर से नीचे का हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया।

रीव रीढ़ की हड्डी की चोटों पर शोध के लिए एक महत्वपूर्ण उच्च-स्तरीय अधिवक्ता बन गए, उन्होंने क्रिस्टोफर और डाना रीव फाउंडेशन की स्थापना की, जो विकलांगता जागरूकता और धन जुटाने के लिए समर्पित है।

आत्म-विश्वास के बारे में उद्धरण

- "दिन के अंत में, हम जितना सोचते हैं उससे कहीं अधिक सहन कर सकते हैं।"

- फ्रिदा काहलो

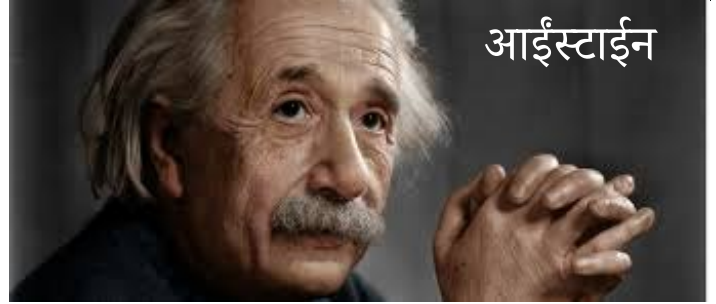
फ्रिदा काहलो एक मैक्सिकन



क्रिस्टोफर रीव



मुहम्मद अली



आईंस्टाईन

कलाकार थीं जिनका जीवन चुनौतियों से घिरा रहा।

स्पाइना बिफिडा के साथ जन्म से ही उनके पैरों का विकास प्रभावित हो रहा था, तथा छह वर्ष की आयु में उन्हें पोलियो भी हो गया था।

किशोरावस्था में वह एक कार दुर्घटना में शामिल हो गयीं जिससे उनकी रीढ़ और श्रोणि को काफी क्षति पहुंची।

फ्रिदा काहलो मुश्किल परिस्थितियों को सकारात्मक रूप में बदलने का एक प्रेरणादायक उदाहरण हैं। उनका ज्यादातर काम उनके दर्द और विकलांगता के अनुभवों से प्रेरित था।

- "असंभव सिर्फ एक बड़ा शब्द है जिसे छोटे लोगों द्वारा इधर-उधर फेंका जाता है, जिन्हें इस दुनिया में जीना आसान लगता है, बजाय इसके कि वे इसे बदलने की शक्ति का पता लगाएँ। असंभव कोई तथ्य नहीं है। यह



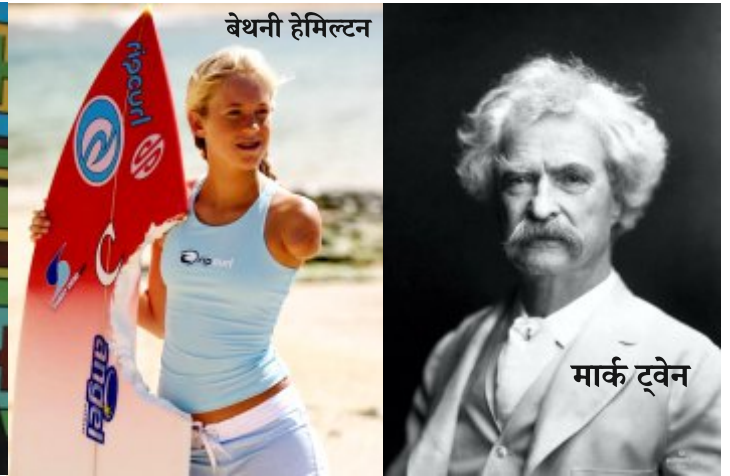
निक वुजिसिक





लुई ब्रेल

डॉ टेम्पल ग्रैंडिन



बेथनी हेमिल्टन

मार्क ट्वेन

एक राय है। असंभव कोई घोषणा नहीं है। यह एक चुनौती है। असंभव में संभावनाएँ हैं। असंभव अस्थायी है। असंभव कुछ भी नहीं है।"

- मुहम्मद अली

चैंपियन मुक्केबाज मुहम्मद अली को मात्र 42 वर्ष की आयु में पार्किंसन रोग हो गया।

बीमारी के खिलाफ लड़ाई उनकी ज़िंदगी की सबसे बड़ी लड़ाई बन गई। अगले 40 सालों में अली ने बीमारी के बारे में लोगों को जागरूक किया और हमें सकारात्मकता और मौजूदा हालातों से उबरने के बारे में सिखाया।

• "हर कोई प्रतिभाशाली है। लेकिन अगर आप किसी मछली को पेड़ पर चढ़ने की उसकी क्षमता से आंकेंगे, तो वह पूरी ज़िंदगी यही सोचती रहेगी कि वह मूर्ख है।"

- अल्बर्ट आइंस्टीन

आइंस्टीन का यह कथन हमें सिखाता है कि न्यूरोडाइवर्जेंस एक मानवीय उपहार है जिसे पोषित किया जाना चाहिए।

यह अंतर्दृष्टि आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी तब थी, क्योंकि न्यूरोडाइवर्जेंस आज भी सबसे कम

समझी जाने वाली और सबसे अधिक नजरअंदाज की जाने वाली विकलांगताओं में से एक है।

• "स्वीकृति का मतलब हार मान लेना नहीं है; इसका मतलब है यह समझना कि कोई चीज़ वैसी ही है जैसी वह है और उससे बाहर निकलने का कोई रास्ता ज़रूर होगा।"

- माइकल जे. फ़ॉक्स

बैक टू द फ्यूचर फिल्म के स्टार माइकल जे. फ़ॉक्स को युवावस्था में ही पार्किंसन रोग हो गया था। फ़ॉक्स समझते हैं कि विकलांग लोगों को अपनी सीमाओं पर विजय पाने के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ता है, लेकिन दृढ़ता ही उन पर विजय पाने की कुंजी है।

• "मैं देख सकता हूँ कि सामान्य सोच का पालन न करने और रचनात्मक सोच के बीच एक संबंध है। अगर मैं सामान्य तरीके से सोचता तो मेरे पास अच्छे वैज्ञानिक विचार नहीं होते।"

- जॉन फोर्ब्स नैश जूनियर

जॉन फोर्ब्स नैश जूनियर फिल्म ए ब्यूटीफुल माइंड का विषय थे, जिसमें हम नैश की चुनौतियों और जीत को एक प्रतिभाशाली गणितज्ञ के रूप में देखते हैं, जो पैरानॉयड सिज़ोफ्रेनिया से जूझ रहा है।



- "मैं आधिकारिक तौर पर विकलांग हूँ, लेकिन मैं अपने अंगों की कमी के कारण वास्तव में सक्षम हूँ। मेरी अनूठी चुनौतियों ने ज़रूरतमंदों तक पहुँचने के लिए अनूठे अवसर खोले हैं।"

- निक वुजिसिक

निक वुजिसिक एक प्रेरक वक्ता और कोच हैं, जिनका जन्म जोड़ों के नीचे हाथ या पैर के बिना हुआ है। अक्सर विनोदी और आत्म-हीन, वुजिसिक का मिशन सकारात्मकता और आत्म-सम्मान फैलाना है।

- "यह शायद कोई संयोग नहीं था कि यह अपंग हेफेस्टस ही था जिसने सरल मशीनें बनाई; एक सामान्य व्यक्ति को क्रैंक, चैन और धातु के हिस्सों के माध्यम से बाधाओं पर खुद को उठाने या जैक करने की ज़रूरत नहीं थी।"



स्टीवी वंडर



रोबर्ट हेन्सल

प्रदान करने के लाभों को दर्शाता है।

- "वायुगतिकीय दृष्टि से भौरे को उड़ने में सक्षम नहीं होना चाहिए, लेकिन भौरे को यह पता नहीं है, इसलिए वह फिर भी उड़ता रहता है।"

- मैरी के ऐश

यह एक सुंदर उद्धरण है कि कैसे हम विकलांगता के बारे में लोगों को गलत साबित कर सकते हैं; कागज पर जो लिखा है वह हमारे सपनों को साकार करने के हमारे आंतरिक दृढ़ संकल्प को नहीं दर्शाता है।

- "मैं चाहती हूँ कि मेरे जैसे लोग यह समझें कि उन्हें विकलांगता को अपने रास्ते में नहीं आने देना चाहिए। मैं जागरूकता बढ़ाना चाहती हूँ - मैं अपनी विकलांगता को योग्यता में बदलना चाहती हूँ।"

- सुसान बॉयल

- सॉल बेलो, द एडवेंचर्स ऑफ़ ऑंगी मार्च

विकलांगता का अनुभव शिक्षाप्रद हो सकता है, जिससे विकलांग लोगों को दुनिया को अलग नजरिए से देखने का मौका मिलता है।

- जीवन संतुलन के बारे में है। चूँकि मेरे पास केवल एक पैर है, इसलिए मैं इसे अच्छी तरह समझता हूँ।"

- सैंडी फ़सेल, शाओलिन टाइगर

कभी-कभी हँसी सबसे अच्छी दवा होती है। शाओलिन टाइगर बच्चों के लिए एक प्रेरणादायक उपन्यास है जो एक साथ काम करने और आपसी सहयोग

सुज़ैन बॉयल, जिनका जन्म से मस्तिष्क क्षतिग्रस्त था, प्रतिभा शो ब्रिटेन्स गॉट टैलेंट से प्रसिद्ध हुईं और दूसरों की अपेक्षाओं को धता बताते हुए एक सफल गायिका बनीं।

उनका उदाहरण हमें मतभेदों का जश्न मनाने और अधिक समावेशी समाज बनने के लिए प्रोत्साहित करता है।

- "मुझे आसान की ज़रूरत नहीं है। मुझे बस संभव की ज़रूरत है।" - बेथनी हैमिल्टन

बेथनी हैमिल्टन ने 13 साल की उम्र में एक चौंकाने



वाले शार्क हमले में अपना एक हाथ खो दिया था, लेकिन फिर भी उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा जारी रखी। उनकी कहानी ने हेलेन हंट अभिनीत फिल्म सोल सर्फर को प्रेरित किया। बेथनी हमारे शीर्ष प्रेरणादायक विकलांग एथलीटों में से एक हैं।

- "इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितनी धीमी गति से चलते हैं, जब तक आप रुकते नहीं हैं।"

- कन्फ्यूशियस

कन्फ्यूशियस दृढ़ संकल्प, दृढ़ता और आत्म-विश्वास के महत्व को समझते थे, चाहे चुनौती कितनी भी बड़ी क्यों न हो।

- "सिर्फ इसलिए कि किसी व्यक्ति की आँखें काम नहीं करतीं, इसका मतलब यह नहीं है कि उसमें दृष्टि की कमी है।"

- स्टीवी वंडर



स्टेला यंग



सुसान बोयल

स्टीवी वंडर इस बात का सच्चा उदाहरण है कि दृढ़ संकल्प और धैर्य से क्या हासिल किया जा सकता है।

अपनी अंधेपन के बावजूद, स्टीवी वंडर ने नौ वर्ष की उम्र में पियानो, हारमोनिका और ड्रम बजाना सीख लिया और विश्व प्रसिद्ध कलाकार बन गये।

- "दया एक ऐसी भाषा है जिसे बहरे सुन सकते हैं और अंधे देख सकते हैं।"

- मार्क ट्वेन

मार्क ट्वेन स्वयं विकलांग नहीं थे, फिर भी उन्होंने अपने आस-पास हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई।

चाहे वह नस्लवाद हो, वर्ग संबंधी मुद्दे हों, शिक्षा तक पहुंच हो या विकलांगता अधिकार हों, ट्वेन विकलांग समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण सहयोगी थे।

- "दुनिया में सबसे दयनीय व्यक्ति वह है जिसके पास आँखे तो हैं लेकिन दृष्टि नहीं है।"

- हेलेन केलर

केलर मार्क ट्वेन के बहुत अच्छे मित्र थे और संभवतः विकलांगता को देखने के उनके नजरिए पर उनका प्रभाव पड़ा था।

- हमारे साथ बराबरी का व्यवहार किया जाना चाहिए - और संचार ही वह तरीका है जिससे हम ऐसा कर सकते हैं।"

- लुई ब्रेल

लुई ब्रेल ने अंधे लोगों के लिए ब्रेल लिपि पढ़ने की प्रणाली विकसित की।

ब्रेल ने स्वयं 15 वर्ष की आयु में एक दुर्घटना में अपनी दृष्टि खो दी थी, जिससे उन्हें यह प्रणाली बनाने की प्रेरणा मिली, जो आज भी व्यापक रूप से प्रयोग में लाई



जाती है।

- "मेरी विकलांगता इसलिए नहीं है कि मैं व्हीलचेयर का उपयोग करती हूँ, बल्कि इसलिए है क्योंकि व्यापक वातावरण सुलभ नहीं है।"

- स्टेला यंग

स्टेला यंग एक ऑस्ट्रेलियाई हास्य कलाकार और आजीवन व्हीलचेयर उपयोगकर्ता हैं, जो अपने मंच का उपयोग सुगम्यता से जुड़े मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए करती हैं।

- "हम, जो चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, उनकी बात सुनी जानी चाहिए। हमें विकलांग के रूप में नहीं, बल्कि ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा जाना चाहिए जो खिलता रहा है और खिलता रहेगा। हमें न केवल विकलांग के रूप में देखा जाना चाहिए, बल्कि एक स्वस्थ इंसान के रूप में भी देखा जाना चाहिए।"

- रॉबर्ट हेन्सल

स्पाइना बिफिडा के साथ जन्मे रॉबर्ट के नाम सबसे लंबे समय तक बिना रुके व्हीलचेयर पर घूमने का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड है।

- "दुनिया विकलांग लोगों की तुलना में विकलांगता के बारे में अधिक चिंतित है।"

- वारविक डेविस

वारविक डेविस एक अभिनेता हैं जो हैरी पॉटर और स्टार वार्स में अपनी भूमिकाओं के लिए जाने जाते हैं। वह एक दुर्लभ अस्थि वृद्धि विकार के साथ पैदा हुए थे जिसके परिणामस्वरूप बौनापन होता है।

- "मैं अलग हूँ, कम नहीं।"

-डॉ. टेम्पल ग्रैंडिन

डॉ. मैरी टेम्पल एक वैज्ञानिक और प्रसिद्ध पशु

व्यवहार विशेषज्ञ हैं, जो ऑटिज्म से पीड़ित हैं।

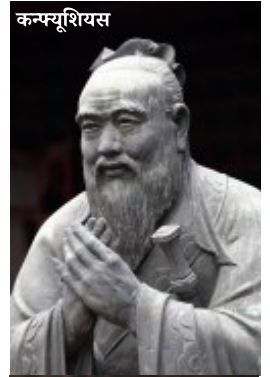
डॉ. टेम्पल ऑटिज्म से संबंधित अपने व्यक्तिगत अनुभव तथा इस स्थिति के बारे में अपनी अंतर्दृष्टि को दस्तावेज में दर्ज करने वाली पहली लोगों में से एक थीं।

हमें दिव्यांग लोगों से क्यों सीखना चाहिए ?

इस लेख में हमने जिन एथलीटों, वैज्ञानिकों, लेखकों, दार्शनिकों, गायकों, संगीतकारों

और अभिनेताओं का उल्लेख किया है, उन्होंने कभी भी खुद पर विश्वास करना बंद नहीं किया, चाहे जीवन में कुछ चीजें कितनी भी कठिन क्यों न रही हों। हालाँकि विकलांगता लोगों को उनकी और अक्सर उनके परिवारों की अपेक्षा से थोड़ा अलग रास्ते पर ले जा सकती है, विकलांग लोग लगातार लोगों को गलत साबित करने का प्रयास करते हैं।

विकलांगता चाहे कितनी भी बड़ी या छोटी क्यों न हो, हम सभी को मानसिक या शारीरिक रूप से विकलांग लोगों द्वारा दिखाई गई सकारात्मकता पर ध्यान देना चाहिए और सीखना चाहिए कि खुशी छोटी-छोटी चीजों में निहित है; छोटे-छोटे कार्यों को पूरा करने की क्षमता, जो हम नहीं कर सकते हैं उसके बजाय जो हम कर सकते हैं उसमें खुशी ढूँढना, और अंततः, भिन्नताओं और समृद्ध संस्कृति का जश्न मनाना, जिसे प्रत्येक विविध मानव उपहार बनाने में मदद करता है।





समझौता नहीं, संघर्ष के महारथी - अनिल कुमार अनेजा

अगर आप देख नहीं सकते या फिर आप में कोई और शारीरिक कमी है तो इसका मतलब यह कतई नहीं कि आप किसी से कम हैं। सोच से हर चीज बदली जा सकती है, यह कहना है प्रो. अनिल कुमार अनेजा का, जो न सिर्फ दिल्ली यूनिवर्सिटी में प्रफेसर हैं, बल्कि १०० फीसदी दृष्टिहीन होने के बावजूद बरसों से दृष्टिहीनों के हक की लड़ाई कई मोर्चों पर लड़ रहे हैं।

अनिल की सोच है – संघर्ष करो, समझौता नहीं और इस सोच को उन्होंने बचपन से ही साकार किया है। वह बताते हैं, 'मेरे परिवार में दो भाई और दो बहनें थीं। मेरी बड़ी बहन भी देख नहीं सकती थीं इसलिए मां-पापा ने उसे पढ़ने के लिए स्कूल नहीं भेजा। उन्होंने मुझे भी स्कूल भेजने से इनकार कर दिया था, लेकिन मुझे यह मंजूर नहीं था। मेरा मानना था कि मेरा दृष्टिहीन होना मुझे पढ़ने-लिखने या कोई और काम करने में रोड़ा नहीं बन सकता। पैरेंट्स नहीं चाहते थे कि बाहर जाकर मुझे किसी तरह की दिक्कत का सामना करना पड़े, लेकिन जब मैंने दो दिन तक खाना नहीं खाया तो मेरे पैरेंट्स को मेरा एडमिशन स्कूल में कराना पड़ा।'

हालांकि आगे की राह भी इतनी आसान नहीं थी। उस वक्त ब्लाइंड स्कूलों में म्यूजिक और हैंडिक्राफ्ट्स जैसी चीजों पर ही फोकस किया जाता

था, लेकिन अनिल ने जिद की कि उन्हें सामान्य बच्चों की तरह दूसरे सब्जेक्ट पढ़ने हैं। तब उन्हें हिंदी, इंग्लिश, हिस्ट्री, पॉलिटिकल साइंस, संस्कृत पढ़ने का मौका मिला, लेकिन पढ़ाने के लिए उन्हें न कोई टीचर मिला, न ही ब्रेल में किताबें। अपनी मेहनत के दम पर अनिल ने सीबीएसई की मेरिट लिस्ट में जगह बनाई। यह मुकाम पाने वाले वह पहले दृष्टिहीन थे। इस रिजल्ट के दम पर उन्हें दिल्ली के सेंट स्टीफंस में इंग्लिश ऑनर्स में एडमिशन मिल गया। हालांकि हिंदी पृष्ठभूमि की वजह से शुरू में दिक्कतें भी आईं, लेकिन अनिल ने न सिर्फ पढ़ाई में बेहतर करके दिखाया बल्कि कॉलेज की कल्चलर कमिटी और

“दिव्यांगता से लड़ने के लिए शरीर के अंगों की नहीं बल्कि हौंसले की जरूरत”

- अनिल कुमार अनेजा





स्टूडेंट्स यूनियन से भी जुड़े। उन्होंने सेंट स्टीफंस में पहली बार हिंदी डिबेट और हिंदी नाटक शुरू कराया। दिल्ली यूनिवर्सिटी से एमफिल और पीएचडी करने के बाद अनिल ने १९७७ में रामजस कॉलेज में इंग्लिश पढ़ाना शुरू किया। हालांकि इस जॉब को हासिल करने भी दिक्कतें आईं क्योंकि लोग यह मानने को ही तैयार नहीं थे कि जो देख नहीं सकता, वह दूसरों को पढ़ा भी सकता है।

बकौल अनिल, '१९९५ में मैंने सोचना शुरू किया कि अब समाज को लौटाने का वक्त आ गया है। तब मैंने दृष्टिहीनों के अधिकारों की लड़ाई शुरू की और वकालत पास न करने के बावजूद उनके केस लड़ने शुरू किए। फिलहाल अनिल 'ऑल इंडिया कन्फेडरेशन ऑफ द ब्लाइंड्स' के वाइस प्रेसिडेंट, एशियन ब्लाइंड यूनिन और वर्ल्ड ब्लाइंड यूनिन के अध्यक्ष हैं। साथ ही, पीडब्लूडी के नोडल ऑफिसर

और यूनिवर्सिटी के इक्वल ऑपरचुनिटी सेल में ऑफिसर ऑन स्पेशल ड्यूटी हैं। उन्होंने कॉम्बैटिंग डिस्क्रीमिनेशन: सम पाथ ब्रेकिंग एडवोकेसी इनिशिएटिव्स फॉर द विजुअली इम्पेयर्ड नाम से किताब भी लिखी। उन्हें २०१४ में उन्हें नैशनल अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। वे अब तक तमाम पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं। अनिल का मानना है कि समस्याएं होंगी, लेकिन उनके बारे में सोचकर वक्त मत गंवाओ क्योंकि जिंदगी बहुत छोटी है। समस्याओं पर काबू पाओ और ऐसी राह बनाओ जिस पर दूसरे चल सकें!

अनिल कुमार अनेजा ने केंद्रीय साहित्य अकादेमी के पहले अखिल भारतीय दिव्यांग लेखक सम्मिलन में कहा कि दिव्यांगता से लड़ने के लिए शरीर के अंगों की नहीं बल्कि हौंसले की जरूरत है। पूरे दिन अलग-अलग सत्रों में विभक्त इस सम्मिलन में देश भर से विविध भाषाओं के रचनाकारों ने हिस्सा लिया।

इस कार्यक्रम में 'मेरी साहित्यिक यात्रा' विषयक सत्र की अध्यक्षता अंग्रेज़ी के अनिल कुमार



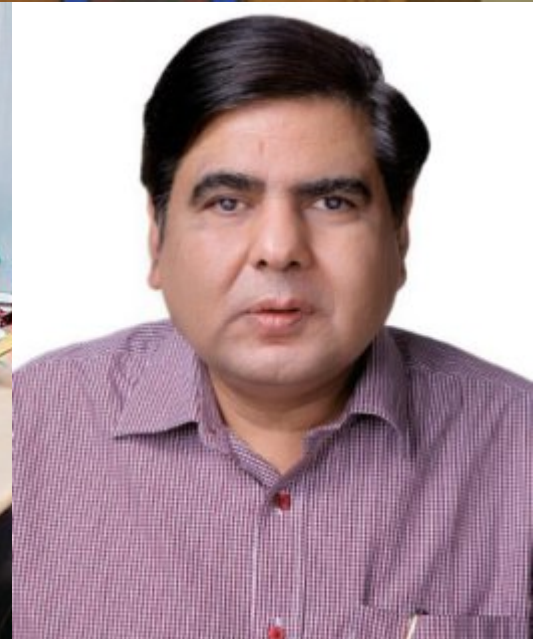
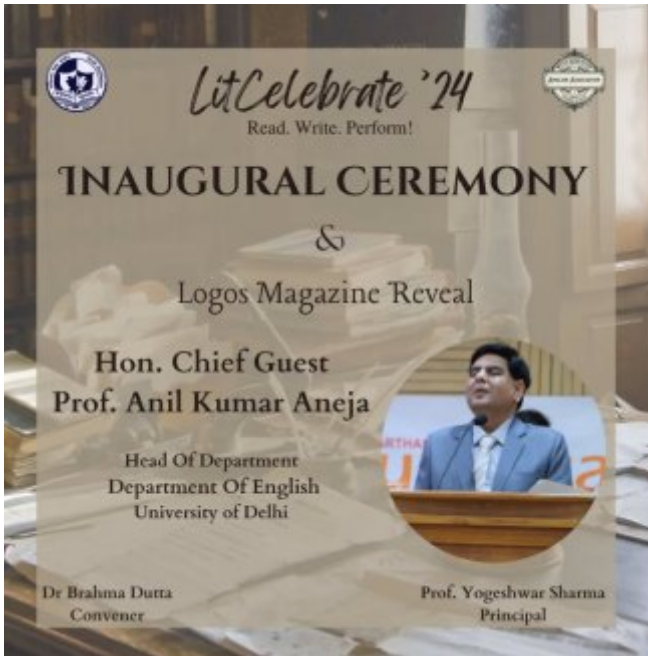


अनेजा ने की। इस सत्र में असमिया के ध्रुव ज्योति दास, मलयाळम् के मारियथ सीएच तथा ओड़िआ के बिराज राउतराय ने अपने-अपने अनुभव प्रस्तुत किए. इन सभी ने कहा कि उन्होंने अपनी दिव्यांगता से उबरने के लिए साहित्य का सहारा लिया जिसके चलते उनका जीवन सहज और सरल होता गया है। सत्र के अध्यक्ष अनिल कुमार अनेजा ने कहा कि इस

जिससे हम भावनाओं के पंख से हासिल कर सकते हैं। दिव्यांग लेखकों की साहित्यिक यात्रा आम रचनाकारों से बिलकुल अलग और विशिष्ट होती है। उन्होंने पूर्व के अनेक दिव्यांग लेखकों का उल्लेख करते हुए कहा कि हमें उन्हें भी प्रकाश में लाने की ज़रूरत है।

★★★

सम्मिलन से दो बातें बहुत स्पष्ट रूप से समझ में आती हैं कि दिव्यांगता से लड़ने के लिए शरीर के अंगों की नहीं, बल्कि हौसले की जरूरत होती है और





मानसिक रूप से दिव्यांग बच्चों ने किया पवित्र कुंभ स्नान...

नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ.हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फोर मेन्टली डिसेबल्ड के आठ लाभार्थियों को कनाडा निवासी प्रियाबेन और दीक्षाबेन, उनके शिक्षकों नीलेश पांचाल और संगीता पांचाल के साथ महाकुंभ ले गए।

नवजीवन संस्था द्वारा सम्पूर्ण गुजरात में पहली बार एक साथ 8 विद्यार्थियों के लिए पवित्र कुंभ स्नान का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने स्नान कर आनंद की अनुभूति की।





मानसिक रूप से दिव्यांग छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

सोसायटी फोर ध वेलफेयर ऑफ ध मेन्टली रिटायरडेड द्वारा शहर के मनोदिव्यांग लोगों के लिए कार्यरत 30 से अधिक स्वयंसेवी संस्था द्वारा 600 से अधिक मनोदिव्यांग छात्रों के लिए शहर के टागोर होल में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। सांस्कृतिक कार्यक्रम के दो शो में से पहले शो में रीमा देसाई और नीता झाला निर्णायक के रूप में उपस्थित

रही थी। 18 साल से कम उम्र के ग्रुप में भाग लेने वाली 15 संस्थाओं में से नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ. हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फोर मेन्टली डिसेबल्ड के मनोदिव्यांग छात्रों द्वारा प्रस्तुत भगत गोरा कुंभार डान्स प्रस्तुति को पहला पारितोषिक प्राप्त हुआ। मनोदिव्यांग छात्रों को अपनी प्रतिभा को प्रस्तुत करने के लिए सर्वोत्तम मंच उपलब्ध कराया जाता है।





वसंत पंचमी के इस पावन अवसर पर हम अपने मानसिक रूप से विकलांग बच्चों के साथ सरस्वती पूजा और गायत्री हवन करेंगे।





अंकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

संचालित (N.G.O.)

अंकार दिव्यांग ट्रेनिंग डे-केर सेन्टर

मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए निःशुल्क तालीम संस्था



- ▲ World Autism Day ▲ Table Tennis Competition ▲ Painting Competition ▲ Sports Day Celebration
- ▲ Rakshabandhan Celebration ▲ 15th August Celebration ▲ Janmashtami Celebration
- ▲ Anand Niketan School Visit ▲ Picnic ▲ Traffic Awareness Program Navratri Celebration

★★★ शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करें ★★★

सुमेल ५, हाउस नं.: ४८/डी, बिजनेस पार्क, चामुंडा ब्रीज कोर्नर,
असारवा, अहमदाबाद-३८००१६ मो.: 99749 55125, 99749 55365